Topic ..... Date..... Page No. .....

NAME → ADITI SHARMA

ROLL NO → 18/16

SEMESTER → III rd

PAPER CODE → 12133901

PAPER → ACTING AND SCRIPT WRITING

COURSE → B.A (H) Sanskrit

YEAR → II nd

BLUE Panda

इसी प्रसंग में भरत ने नाट्यकार (नाट्यलेखक) (कवि) की भी चर्चा की है। नाट्य प्रयोग के लिए सभा - सन्निवेश, सभापति, मन्त्री, सभासदों के लक्षणों का भी विवरण दिया है। इनमें कतिपय सभी प्रमुख प्रयोक्ताओं का स्वरूप स्पष्ट किया जा रहा है।

•) **भरत :->** 'भृञ् धातु से 'अतच्' ("अत") प्रत्यय करके अथवा 'भरत' वद् पूर्वक 'तनु' धातु से 'ड' प्रत्यय के योग से प्राप्त भरत शब्द व्युत्पन्न है। प्रथम व्युत्पत्ति का अर्थ है - "बिभर्ति स्वांगम्"। अर्थात् जो स्वांग भरता है। लोक में इसे बहुरूपिया भी कहते हैं। दूसरी व्युत्पत्ति का अर्थ है - "बिभर्ति लोकान्") अर्थात् जो लोक का भरण - पोषण करता है। नाट्य के परिप्रेक्ष्य में प्रथम व्युत्पत्ति भरतों के स्वरूप का परिचायक है।

☆ नाट्य प्रयोक्ताओं को यह नाम भरतमुनि द्वारा प्रशस्त मार्ग का अनुसरण करने के कारण प्राप्त हुआ। नाट्यशास्त्र प्रति परम्परा में भरत शब्द एकवचन और बहुवचन दोनों ही रूपों में मिलता है। ब्रह्मा से नाट्यवेद ग्रहण कर उसकी शिक्षा का प्रचार - प्रसार करने वाले भरतमुनि के लिए एकवचनान्त भरत पद का प्रयोग किया जाता है। नाट्यप्रयोग

BLUE Panda

के भरण या धारण करने वाले प्रयोक्ताओं के लिए बहुवचनान्त भरत शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिस - जिस कला प्रयोक्ताओं इस कौशल का आश्रय लेकर अपनी आजीविका चलाते है। उन उन कलाओं के नाम से उनकी जातियाँ कही जाती है। इसलिए, नाट्यशास्त्र का कर्ता भी भरत नाम से प्रसिद्ध है। और नाट्य से अपनी आजीविका चलाने वाला नट परिवार भी कहलाता है। इसी ग्रन्थ में एक अन्य प्रसंग में भाषा, वर्णों और विविध उपकरणों की सहायता से अनेक प्रकृतियों के वेश, कर्म, चेष्टा, का धारण करने के कारण नाट्यप्रयोक्ताओं की भरत संज्ञा का विधान किया गया है।

भरत शब्द में तीन अकार है :- भकार, रकार, और तकार। भकार से भाव, रकार से राग और तकार से ताल का ग्रहण होता है। जातिवाचक संज्ञा के रूप में भरत उस समुदाय को कहते है। जो गायन, वादन, नर्तन और अभिनय में पारंगत था।

प्रायः :→ नाट्यशास्त्र भरत नामक किसी एक व्यक्ति की रचना मानी जाती है वस्तुतः अलग - अलग समय में अनेक भरतों ने, नाट्यशास्त्र के वर्तमान कलेवर को गढ़ने में अपना में अपना योगदान किया है। सम्भवतः इसीलिए उन्हें संघर्ष और ताप तथा अपमान का भागीदार बनने

अभिनय एवं प्रयोक्ता

अभिनय के सम्बन्ध में प्रयोक्तागण से अभिप्राय है — 'नाट्यमण्डली'। इसमें अभिनय करने वाले अभिनेताओं और अभिनय में सहायता करने वाले व्यक्तियों का समूह परिगणित है।

नाट्यप्रयोक्ताओं को मुख्यतः तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है —

1) अभिनय के आधार पर — सूत्रधार, स्थापक, पारिपार्श्विक, भरत, कुशीलव, शैलूष, नायकादि पात्र की भूमिका निभाने वाले नट, नटी, नर्तक, नर्तकी आदि।

2) संगीतज्ञ — गन्धर्व, किन्नर, तौरिप, नन्दी, बन्दी, वैतालिक, चारण, मागध, गायक, वीणावादक, वेणुवादक, मार्दंगिक, तालधारक, वाग्गेयकार आदि।

3) नाट्योपयोगी उपादान सम्भारक — इसके भी 2 वर्ग किए जाते हैं —

i) पहले उपवर्ग में प्रशिक्षक, नाट्याचार्य, उपाध्याय आदि।

ii) दूसरा कारक, माल्यकार, आभरणकार, मुकुटकार, शिल्पी आदि सहकारी।

- इसी प्रसंग में भरत ने नाट्यकार (नाट्य लेखक) की भी चर्चा की है।

★ नट - नटी - भरतों के लिए सर्वाधिक प्रचलित संज्ञा नट है। इसका सामान्य अर्थ है। - नाचने वाला या अभिनय करने वाला। नट शब्द भ्वादिगणीय नट अवस्पन्दने धातु से अच् प्रत्यय से निर्मित है। जो लोक की चरित वृतान्त और जीवन की घटनाओं का रस, भाव और सात्विक भाव से संयुक्त करके मंचन करता है वह 'नट' कहलाता है। नाट्य में रस की प्रधानता के कारण सात्विक अभिनय की प्रधानता होती है। नृत्य में पदार्थ की प्रधानता से प्रत्येक भाव शारीरिक अंगों की विविध मुद्राओं से ही प्रदर्शित किया जाता है। इसमें आंगिक अभिनय का प्राधान्य होता है। नट और नृत्य की प्रधानता नर्तक कहलाता है। नाट्य के प्रदर्शन के व्यवसाय से जुड़े या नाट्य को अपनी आजीविका का साधन बनाने वाले लोगों के समूह की नट संज्ञा उसी आधार पर है।

★ नटी - भरत के अनुसार जो शरीररूपगुण, सौन्दर्य, सौभाग्य, धैर्य व शील से सम्पन्न, कोमल, मधुर, स्निग्ध,

और आकर्षक कण्ठ स्वर से युक्त, हेला और भाव का अभिनय करने में समर्थ, मृदु व्यवहार वाली, वाद्यों के वादन में कुशल, स्वर, ताल, लय और यति का समुचित बोध रखने वाली, वाद्यों के वादन में कुशल, स्वर, ताल, लय और यति का समुचित बोध रखने वाली नाट्याचार्य की सुश्रूषा करने वाली, चतुर, नाट्यप्रयोग में कुशल, ऊहापोह में समर्थ, रूप और यौवनशालिनी स्त्री नटी या कहलाती है। भरत का अभिप्राय यहाँ प्रधानभूमिका का निर्वाह करने वाली अभिनेत्री से है। इसे नाट्य में प्रधान भूमिका दी जाती है। उदाहरण - मालविकाग्निमित्रम् में मालविका की भूमिका का निर्वाह करने वाली नटी।

★ सूत्रधार - संस्कृत नाट्यशास्त्र की परम्परा में सूत्रधार का स्थान सभी प्रयोक्ताओं में प्रमुख है। यह प्रयोग का प्राण बन कर पात्रों को जीवन और गति देता है। नाट्य के शास्त्रीय पक्ष को जानने के कारण इसे 'सूत्रज्ञ' भी कहते हैं। सूत्रज्ञ का अभिप्राय - "नट सूत्रों के जानने वाला।

सूत्रधार के गुण - सूत्रधार, मेधावी, बुद्धिमानी, धैर्यवान, उदार अपनी बात का पक्का, कवि, स्वस्थ, मृदुभाषी, समान व्यवहार करने वाला, शान्त, सदाचारी, प्रियवक्ता, क्रोधरहित, सत्यभाषी, पवित्र और प्राप्ति के अवसरों पर लोभ रहित होना चाहिए।

* **नाट्याचार्य** - भरतमुनि ने सूत्रधार को ही नाट्याचार्य कहा है। यह विद्वानों से प्राप्त शिक्षण और शास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर अपने ज्ञान से गीत, वाद्य, नृत्त तथा पाठ्य को अभिनेताओं से प्रयोग कराता है। यह ज्ञान, विज्ञान, कारण, वचन, प्रयोग सिद्धि और शिष्यनिष्पादन की क्षमता से युक्त होता है।

* **स्थापक** - सूत्रधार के सहायकों में स्थापक का दायित्व सर्वाधिक उल्लेखनीय है। स्थापक (स्था + णिच् + पुक् + ण्वुल्) व्युत्पत्ति परक सामान्य अर्थ है। - स्थापित करने वाला, नींव डालने वाला, कथावस्तु को दृढ़ता से जमाने वाला।

* **पारिपार्श्विक** - परि उपसर्ग पूर्वक पार्श्व शब्द से स्वार्थ ठक् प्रत्यय और आदि अच् की वृद्धि करने पर पारिपार्श्विक शब्द बना है। इसका अर्थ

है - समीप अथवा अगल-बगल में रहने वाला।

सहायता के लिए सूत्रधार के समीप में विशेष नट। "परितः समन्तात् सूत्रधारस्य पार्श्वे चरतीति पारिपार्श्विकः")। वस्तुतः यह सूत्रधार का सहयोगी नट। जो भरतों के द्वारा अभिनीत अनेक प्रकार के रसों पर आश्रित भावों का परिष्कार करता है। वह सूत्रधार के पार्श्वस्थ होने से पारिपार्श्विक कहलाता है।

• नान्दी के बाद दोनों पारिपार्श्विक उच्च स्वर से नान्दी की भावना के अनुसार स्तुति आदि पाठ का उच्चारण करें। उच्चारण विशेष के कारण इसे वादी भी कहते हैं।

* **विदूषक** - नाटकीय कथानक में राजा या मुख्य नायक के श्रृंगार - सहायक नर्मसचिव के रूप में। वह चाटुकारिता से भरी मीठी बातें बनाने में कुशल, प्रधान नायक का मुख्य सहयोगी और परिहास से ही नायक - नायिका को मिलाने में मुख्य भूमिका निभाता है। अपनी भोजनप्रियता और हंसी उत्पन्न करने वाली से दर्शकों का मनोरंजन करता है।

: विदूषक के रूप, आकृति और गुणों की चर्चा में भरत कहते हैं कि ठिगने कद का, लम्बे दाँत वाला, कुबड़ा, इधर-उधर बातों को लगाने वाला, अनाकर्षक सूरत वाला, गंजा, पीली अथवा भूरी आँखों वाला व्यक्ति विदूषक होता है।

नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा।
सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते।
चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनापि सा॥

★ कुशीलव - भरत के अनुसार कुश और लव के द्वारा गातव्य विद्या को धारण करके अपनी आजीविका चलाने वाला समूह कुशीलव कहलाता है।

Monika Kumari